निवेदन

सन्निक्रियाद्वयं यत्र, सपित समभावत ।
साधु सम्मेलन तत्र सफलीभूतं सर्वदा ॥

स्था जैन समाज में ही नहीं, किंतु आर्यावर्त के इतिहास में सादड़ी का वृहद् साधु सम्मेलन चिरस्मरणीय और उज्वल ऐतिहासिक प्रसंग बना रहेगा। श्रमण भगवान् श्री महावीर के निर्वाण बाद प्रथम पाटण में पश्चात् ३०० वर्ष के बाद मथुरा में और वी० ९८० में वल्लभीपुर (सौराष्ट्र) में श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में जैन साधु समाज एकत्र होने का और जैन सूत्र सिद्धांत लिपिबद्ध करने का प्रमाण इतिहास में मिलता है।

इसके १५०० वर्ष के बाद समस्त भारत के स्था जैन मुनि २२५ से अधिक संख्या में सं १९९० चैत्र शु० १० को अजमेर में एकत्र हुए थे। जिसमें स्थानकवासी जैन धर्म की प्राय सभी सम्प्रदायों के मुख्य ७ प्रतिनिधि मुनिराज थे।

अग्रगण्य विद्वान् मुनिराजों ने नव समाज के उत्थान के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि अर्थ विचार-विनिमय पूर्वक संघा राग करके संगठन का बीज बोया था। स्व० शतावधानी रत्न चन्द्रजी म०, पूज्य श्री काशीरामजी म० ने इसको सींचा था और स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० की सम्मेलन में दश हुए वर्द्धमान संघ की योजना सबके हृदय में गुंज रही थी।

संघ ऐक्य के प्रतीक श्री प० रत्नचन्द्रजी म०, पूज्य काशीरामजी म० और प्र० ताराचन्दजी म० ने घाटकोपर में एकत्र होकर 'चार संघ' की योजना बनाई और कॉन्फ्रेंस के घाटकोपर अधिवेशन में इस योजना का सत्कार हुआ। इस प्रकार स्था० जैन समाज को संगठित करने की भावना चलती रही आगे बढ़ती रही

सन् १६४८ के दिसम्बर में श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के ११ वें वार्षिकोत्सव पर श्री श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रेंस की ज० क० में गुरुकुल की पुनीत भूमि में संघ ऐक्य को मूर्त स्वरूप देने का प्रस्ताव हुआ। इसको अमली बनाने के लिए माननीय कुन्दनमलजी सा० फिरोदियाजी के नेतृत्व में

शिष्ट मंडल ने प्रयाण किया। प्रारम्भ में पाली 'जैन दिवाकर चौथमलजी म० सा० की सेवा में पहुँचा। श्री चिमनलाल चकु भाई के सहयोग से 'संघ ऐक्य योजना' तैयार की और उस पर मुनिवर्गों की स्वीकृति मिलती रही। कॉन्फरेन्स का और मुनि स० नि० समिति का उत्साह बढ़ता चला, कॉन्फरेंस के मद्रास अधिवेशन में संघ ऐक्य योजना सर्वानुमति से पास हुई। इसी वर्ष में साधु सम्मेलन और बीच २ में प्रान्तीय साधु सम्मेलन और साम्प्रदायिक संगठन करने के प्रयत्न के लिये श्री साधु सम्मेलन नियोजक समिति बनाई, जिसके संयोजक मन्त्री की सेवा का सौभाग्य मुझे मिला। राजस्थान की १७ सम्प्रदायों का सम्मेलन ब्यावर में हुआ था जिसमें ६ सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व था। कॉन्फरेंस द्वारा प्रकाशित वीर संघ की योजना व समाचारी का संशोधन किया था। ६ में से ५ सम्प्रदायों ने अपनी सम्प्रदायों के नाम और पदवियों का त्याग कर वीर वर्द्धमान श्रमण संघ स्थापित किया। पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० को आचार्य चुने और वृहत् साधु सम्मेलन होने तक 'संघ ऐक्य का आदर्श खड़ा किया। दूसरे वर्ष

गुलाबपुरा में ४ बडों का स्नेह सम्मेलन किया। लीबड़ी, गोन्डल बोचन, आदि में सांप्रदायिक सम्मेलन होते रहे। तीसरे वर्ष पंजाब प्रान्तीय और गुजरात प्रान्तीय सम्मेलन लुधियाना और मुरेन्द्रनगर में हुए। सभान के अग्रसरों न वार-बार प्रवास करके जागृति की। और स० २००६ वैशाख शु ३ (अक्षय तृतीया) स सादड़ी (मारवाड़) में श्री वृहद् साधु सम्मेलन भरने का तय हुआ। समय थोड़ा था, विहार लंबा था। गर्मी की मौसम थी, फिर भी हमारे वयोवृद्ध मुनिवर अपने स्वास्थ्य की परवा किये बिना सैकड़ों मिल की पैदल यात्रा करके यथासमय सादड़ी पधार गये। भिन्न २ सम्प्रदायों के सन्त किशनगढ़, अजमेर, ब्यावर म ज्यों २ मिलते गये, वह प्रेम और उदारता म मन्दयता दिखलाते चले। सम्मेलन कार्य बड़ी शान्ति, सभ्यता और विवेक पूर्ण चला। कान्फ्रन्स प्रमुख के नाते भी फिरोदियाजी को तथा मन्त्री के नाते मुझे सम्मेलन की सब कार्यवाही में बैठने का सौभाग्य प्राप्त था। बम्बई धारा सभा के स्वीकर माय फिरोदियाजी सा० न कार्य प्रणाली देखकर कई बार कहा कि, 'सम्मेलन में जो शान्ति, विवेक और शिस्तबद्ध कार्य होता है वह धारासभा से भी अधिक अच्छा होता है।

दूसरा श्रेय शांतिरक्षक प० मुनि श्री मदनलालजी म० सा० और पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० को तथा शान्ति दूत उपाध्याय कवि श्री अमरचन्दजी म०, प० श्रीमलजी म०, वक्ता प० सौभाग्यमलजी म०, मरुधर मन्त्री मिश्रीमलजी म० आदि का है जिन्होंने विचारों को मिलाने में अनूठा प्रयत्न किये।

सम्मेलन में प्रतिनिधियों के अतिरिक्त दर्शक सन्त तथा सतियों का भी बैठने का अवसर मिला था। वै० शु० ३ से त्रयोदशी तक ११ दिन की कार्यवाही स्था० जैन समाज के लिए गौरवरूप थी। जिसके परिणाम रूप विभिन्न सम्प्रदायें एक आचार्य के नेतृत्व में और एक समाचारी में 'श्री वर्द्धमान स्था जैन श्रमण संघ के रूप में सुसंगठित हो गए है। संक्षिप्त कार्य वाही प्रस्ताव रूप में इस पुस्तक में प्रकट है।

शासनदेव इस संघ ऐक्य को स्थायी और सुदृढ बनावें। श्रमण संघ के आदेश पर समस्त स्था० जैन को अखंड वर्धमान स्था जैन श्रावक संघ' नगर २ ग्राम २ में बनें। यही हार्दिक सद्भावना। जैन जयति शासनम्। संघ सेवक

धीरजलाल क० तुरखिया
मन्त्री, श्री साधु सम्मेलन नियोजक समिति

ॐ अर्हम्

श्री बृहत् साधु सम्मेलन, सादड़ी का

सत्तिप्त-विवरण

प्रारम्भ—ता० २७ ४ ५२ मिती वैशाख शुक्ला ३ वी० स० २४७८ रविवार

समाप्ति—ता० ७ ५ ५८ मिती वैशाख शुक्ला १३ सं० २००६ बुधवार

—समय—

प्रात ८ से १०, मध्याह्न १ से ४, रात्रि ८॥ से १०

सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधि,

१—पूज्य श्री आत्मारामजी म० सा० की सम्प्रदाय
मुनि ८७, आर्या ८१

प्रतिनिधि ४—उपाध्याय श्री प्रेमचन्दजी महाराज
युवाचार्य श्री शुक्लचन्दजी ,,
व्या वा ,पं मुनिश्री मदनलालजी म
वक्ता प० मुनि श्री विमलचन्द्रजी म

७—पूज्य श्री *गणेशीलालजी* म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि ३४

आज्ञानुसारिणी रंगूजी माताजी व्रेताजी की
आर्या ७१,

प्रतिनिधि ४—पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज
प० मुनि श्रीमलजी ,,
,, श्री नानालालजी ,,
,, श्री सुमरचन्दजी ,,
,, श्री आइदानजी ,,

८—पूज्य श्री *आनन्दऋषिजी* म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि १६, आर्या ८५

प्रतिनिधि ५—पूज्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज
पं० मुनि श्री उत्तमऋषिजी ,,
कवि श्री हरिऋषिजी ,,
पं० मुनि श्री मोतीऋषिजी ,,
,, ,, भानुऋषिजी ,,

४—पूज्य श्री सूरजचंदजी म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि ६५, आर्या ३८

प्रतिनिधि ५—पं मुनि श्री कस्तूरचंदजी महाराज
उपाध्याय श्री प्यारचंदजी ,,
पूज्य श्री शेषमलजी ,,
युवा० श्री रामलालजी ,,
प० मुनि श्री मनोहरलालजी ,,

५—पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि २१, आर्या ८६

प्रतिनिधि ५-प मुनिश्री प्र वक्ता सौभाग्यमलजी म
,, सूर्यमुनिजी ,
,, ,, शता० केवल मुनिजी ,,
,, ,, मधुरा ,, ,,
,, ,, सागर ,, ,,

६—पूज्य श्री ज्ञानचंद्रजी म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि १३ आर्या १०५

प्रतिनिधि ४ स्थविर मुनि श्री पूर्णमलजी महाराज
(अनुपस्थित)
आत्मार्थी इन्द्रमलजी ,,
मुनिश्री लालचन्दजी ,,
,, ,, मोहनलालजी ,,

७—पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ६, आर्या ३३

प्रतिनिधि २—पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज

८—पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि ४, आर्या ७

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री छगनलालजी महाराज

६—पूज्य श्री मोतीलालजी म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि १४, आर्या ३०

प्रतिनिधि [illegible]—पं० मुनि श्री अम्बालालजी महा०
[illegible] ऋषि श्री शांतिलालजी महाराज

१४—पूज्य श्री *अमरसिंहजी* म० सा० (मरुधर) के
मुनि ७, आर्या ६५

प्रतिनिधि ३–मंत्री मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज
थ० मुनि श्री नारायणदासजी ,,
प० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी ,,

१५—पूज्य श्री *रघुनाथजी* म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि ?, आर्या २६

प्रतिनिधि २–मंत्री मुनि श्री मिश्रीलालजी म०
मुनि श्री रूपचन्दजी म०

१६—पूज्य श्री *चौथमलजी* म० सा० (मरुधर) की
सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री शार्दुलसिंहजी म० के
मुनि ४, आर्या ७

प्रतिनिधि १–पं० मुनि श्री रूपचन्दजी महाराज

१७—पूज्य श्री *स्वामीदासजी* म० सा० की संप्रदाय के
कुल मुनि ७, आर्या १६

प्रतिनिधि २-पं० मुनि श्री छगनलालजी म०
(अनुपस्थित), पं० मुनि श्री कन्हैयालालजी म०

१८—श्री ज्ञातपुत्र महावीरसंघीय मुनि ३, आर्या २

प्रतिनिधि १—धर्मोपदेष्टा प० फूलचन्दजी म०

१९—पूज्य श्री रूपचन्दजी म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि ३, आर्या ४

प्रतिनिधि १—पं० मुनिश्री सुशीलकुमारजी म०

२०—पं० मुनिश्री घासीलालजी म० सा० के मुनि ११

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री समीरमलजी म०
(पहिले पं० प्यारचन्दजी म० को प्रतिनिधित्व
दिया था)

२१—पूज्य श्री जीवनरामजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ३,

प्रतिनिधित्व १—कवि श्री अमरचन्दजी म० के
शिष्य विजयमुनिजी म०

१७-बरवाला सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के मुनि ३, आर्या १८

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री चम्पकलालजी म०
कुल उपस्थित समुदाय २२, मुनि २४१,
आर्याजी ७६८ क,
प्रतिनिधि संख्या ५३, अनुपस्थित २,

प्रतिनिधित्व

१—कोटा सम्प्रदाय के प० मुनि श्री रामकुमारजी म० सा० ने अपने मुनि व आर्याजी का प्रतिनिधित्व प० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० को लिख भेजा ।

२—कोटा सम्प्रदाय के मुनि श्री जीवराजजी म० तथा पं० मुनि श्री हीरामुनिजी ने सम्मेलन में होने वाले सभी प्रस्तावों की स्वीकृति भेजी है। प्रतिनिधि मुनिवरों की गोल बैठक श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल के सेन्ट्रल हॉल में अक्षय तृतीया

(स० २००६ वै० शु ३ शनिवार ता० २७-४-५२) के मध्याह्न ३ बजे से प्रारंभ हुई थी। मंगलाचरण के बाद कार्यवाही प्रारंभ हुई। इस प्रकार —

शान्तिरक्षक का चुनाव

प्र० १—विचार विमर्श के पश्चात् सर्व सम्मति से यह निर्णय किया गया है, कि सभाका संचालन करने के लिये शान्तिरक्षक का पद पूज्य श्री गणेशीलालजी म० एवं व्याख्यान वाचस्पति मदनलालजी म० को दिया जाता है।

दर्शक मुनियों की आज्ञा तथा रिपोर्टरोंकी नियुक्ति

प्र० २—विचार विमर्श के बाद सर्वानुमति से निर्णय हुआ कि अप्रतिनिधि मुनि दर्शक के रूप में रह सकते हैं उन्हें योजना एवं परामर्श दे

का अधिकार नहीं रहता और अपवाद रूप में श्री फिरोदियाजी (कॉन्फरन्स के प्रेसीडेन्ट) भी बैठ सक्ते हैं।

सर्वानुमति से यह पास किया जाता है कि, गुजराती की रिपोर्ट लने के लिये श्री चम्पक मुनिजी म० को एवं हिन्दी रिपोर्ट लने लिये मुनि आईदानजी म० को रिपोर्टर के तौर पर रक्खा जावे।

विषय-निर्धारिणी का चुनाव

प्र० ३—पूर्ण विचार विमर्श क पश्चात् विषय निर्धारणी कमटी का सर्वानुमति से पास हो गया और इसके लिये १५ सदस्यों का चुनाव कर लिया गया।

(१) पू० आनन्द ऋषिजी म०, (२) पू० हस्तीमलजी म०, (३) प० मुनि प्यारचन्दजी म०, (४) उपा० अमरचन्दजी म०, (५) प० इन्द्रमलजी म०, (६) प० श्रीमलजी म०,

(७) उपा० प्रेमचन्दजी म०, (८) पं० मुनि लालचन्दजी म०, (६) प० मुनि सौभाग्य मलजी म०, (१०) मधुकर मुनि मिश्रीलाल जी म०, (११) पं० मुनि सुशील कुमारजी म०, (१२) मरुधर मन्त्री मिश्रीमलजी म०, (१३) मुनि श्री अम्बालालजी म०, (१४) व्या० वा० मदनलालजी म०, और (१५) प० पुष्कर मुनिजी (ता० २७ रात्रि को पार

कार्य प्रणाली

प्र० ४—जो प्रस्ताव पास होंगे, वे यथाशक्य सर्वानुमति से अथवा बहुमत से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुँच जाय कि उन्हें बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो वे प्रस्ताव बहुमत से पास किये जा सकेंगे। बहुमत से तात्पर्य ३/४ अर्थात् ७५% से लिया जायगा।

मत-गणना

प्र० ५—बहुत विचार-संघर्ष के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि-वोटिंग (मत गणना) प्रत्यक्ष में भी लिये जा सकते हैं।

एक आचार्य के नेतृत्व में

प्र० ६—बृहत्साधु सम्मेलन सादड़ी के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि मुनिराज यह निर्णय करते हैं कि, अपनी २ सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके, "एक आचार्य के नेतृत्व में एक संघ" कायम करते हैं।

सर्वानुमति से ता० २८ ४ ५२ मध्याह्न

संघ का नाम

प्र० ७—इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' रहेगा।

सर्व सम्मति से पास ता० २६ प्रात काल

व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल

प्र० ८—शासन को सुविधा-पूर्वक प्रगति देने के लिये और सुव्यवस्था के लिए एक आचार्य के नीचे एक 'व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल' बनाया जाय। —सर्व सम्मति से पास

मन्त्री-मण्डल की संख्या

प्र० ९—व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल के १६ सदस्य होंगे। —सर्व सम्मति से पास

मन्त्री मण्डल का कार्यकाल

प्र० १०—व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल का कार्यकाल तीन साल तक रहेगा।—सर्व सम्मति से पास

संवत्सरी पर्व–निर्णय

प्र० ११—संवत्सरी पर्वाराधन के विषय में कतिपय सम्प्रदायों में मतभेद था, उन सभी सम्प्रदायों का एकीकरण करने के लिए दूसरे

श्रावण तथा प्रथम भाद्रपद में संवत्सरी करने वाला जो बहुल पक्ष है, वह पक्ष संघ एक्य के हेतु "दो श्रावण हो तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हो तो दूसरे भाद्रपद में संवत्सरी करना" प्रेम पूर्वक स्वीकार करता है।

—सर्वसम्मति से पास ता० १२० प्रातःकाल।

पाक्षिक तिथि निर्णय

प्र० १२—पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये ८ साधुओं की कमेटी बनाई गई —

(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (३) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री शुक्लचन्द्रजी म०, (५) मुनि श्री कस्तूरचंद जी म०, (६) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी म०, (७) मरुधर मंत्री श्री मिश्रीलालजी म०, (८) पं० श्री सुशील कुमारजी म०।

तिथि-निर्णय कबसे ?

प्र० १३—पाक्षिक तिथियों के संबंध में कमेटी का जो निर्णय हो वो आगामी वर्ष से माना जाय और आगामी वर्ष के पाक्षिक पत्र कमेटी के विचार से प्रकट हो।

—सर्व सम्मति से पास

दीक्षा के सम्बन्ध में

प्र० १४—(अ)"श्रीवर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के मनोनीत आचार्य और व्यवस्थापक मंत्री, शास्त्र दृष्टि एवं लोकदृष्टि के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार सभी विचार करके दीक्षार्थी की वय, वैराग्य शिक्षण आदिकी योग्यता का यथोचि निर्णय करें।

—सर्वसम्मति से पास ता० २-५-५२ प्रा

(ब) श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ में दीक्षार्थी दीक्षा लेना चाहे वह आचार्य

श्रावण तथा प्रथम भाद्रपद में संवत्सरी करने वाला जो बहुल पक्ष है, वह पक्ष संघ ऐक्य के हेतु 'दो श्रावण हों तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हों तो दूसरे भाद्रपद में संवत्सरी करना" प्रेम पूर्वक स्वीकार करता है।

—सर्वसम्मति से पास ता० ३० प्रातःकाल।

पाक्षिक तिथि निर्णय

प्र० १२—पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये ८ साधुओं की कमेटी बनाई गई —

(१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२) पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, (३) पूज्य श्री हस्तीमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री शुक्लचन्द्रजी म०, (५) मुनि श्री कस्तूरचंद जी म०, (६) उपाध्याय श्री अमरचन्दजी म०, (७) मरुधर मंत्री श्री मिश्रीलालजी म०, (८) पं० श्री सुशील कुमारजी म०।

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का चुनाव

प्र० १६—व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल के १६ मन्त्रियों का चुनाव —

(१) प्रधान मन्त्री—प० श्री आनन्दऋषि जी महाराज। सहायक मन्त्री-(२) पं० श्री हस्तीमलजी म० एव (३) प० प्यारचन्दजी म०, (४) पं० श्री पन्नालालजी म०, (५) मरुधर केशरी मिश्रीमलजी म०, (६) पं० श्री शुक्लचन्दजी म०, (७) पं० श्री किशनलालजी म०, (८) धर्मोपदेष्टा फूलचन्दजी म० (६) पं० श्री प्रेमचन्दजी म०, (१०) पं० श्री पृथ्वीचन्दजी म०, (११) पं० श्री घासीलालजी म०, (१२) पं० श्री पुष्कर मुनिजी म , (१३) प० श्री मोतीलालजी म०, (मेवाड़ी),(१४) प० श्री समर्थमलजी म०, (१५) पं० श्री छगनमलजी म०, (मरुधर), (१६) पं० श्री सहस्रमलजी महाराज —सर्व सम्मति से पास ता० ३ प्रात

मन्त्री-मण्डल का कार्य-विभाग

प्र० ७८—मत्री मण्डल का कार्य विभाग —

१ प्रायश्चित्त— } पं० श्री आनन्दऋषिजी महाराज
,, ,, हस्तीमलजी ,,

२. दीक्षा— } ,, ,, समर्थमलजी ,,
,, ,, सहस्रमलजी ,,

३ सेवा } प० श्री शुक्लचन्दजी महाराज
,, ,, किशनलालजी ,,

४ चातुर्मास } ,, ,, प्यारचन्दजी ,,
,, ,, पन्नालालजी ,,

५ विहार } ,, ,, मोतीलालजी ,,
,, ,, मरुधर मिश्रीमलजी म०

६ आक्षेप निवारक—पं० श्री पृथ्वीचन्दजी महाराज
मरुधर मिश्रीमलजी

७ साहित्य शिक्षण—पं० श्री घासीलालजी
पं० श्री [illegible] मुनिजी ,, ,, हस्तीमलजी

प्रचार—प० श्री प्रेमचन्द्रजी म०, पं० श्री छगन
लालजी म० तथा पं० श्री फूलचन्दजी म०

नोट—इस मन्त्री मण्डल का कार्य तीन वर्ष तक रहेगा। यदि मन्त्री मण्डल में कोई मत भेद होगया हो तो आचार्य श्री फैसला करेंगे। मन्त्री मण्डल यथाशक्य प्रति वर्ष मिले, अगर न मिल सके तो तीसरे वर्ष अवश्य मिलना ही होगा। कोई मन्त्री कारणवश नहीं पधार सके तो अपनी सर्व सत्ता, अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाकर भेज देवें। यह मन्त्री मण्डल अखिल भारतीय श्री वर्द्धमान श्रमण संघ के शासन का उत्तरदायित्व वहन करेगा। आक्षेप निवारक मन्त्री श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ पर आये हुए आक्षेपों का निराकरण करेगा।

—सर्व सम्मति से पास ता० ५ प्रात

आचार्य पद प्रदान विधि

प्र० २१—आचार्य पद चद्दर की रस्म वैशाख शुक्ला १३ (सं० २००६) बुधवार को दिन के ११॥ बजे अदा की जायगी।

उसके पूर्व सब मुनि 'प्रतिज्ञा पत्र' मय दस्तखत के तैयार रखेंगे जो आचार्य पद पर विराजित हो आचार्य श्री के चरणों में भेंट कर देंगे।

—सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रात: काल

संघप्रवेश का प्रतिज्ञा पत्र

प्र० २२—मैं मेरी सम्प्रदाय व साम्प्रदायिक पदवियों विलीनीकरण करके 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ' में प्रविष्ट होता हूँ। मैं संघ के धारणानुसार आचार्य और मन्त्री मंडल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूँगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुराणी तथा बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक में लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्यायवाद करके आज मेरी दीक्षा पर्याय की है।

मेरे भविष्य काल के चारित्र के संबंध में श्रमण संघ के आचार्य श्री और मंत्रियों एवं गुरुजनों को कोई शंका उत्पन्न होगी तो वह सिद्ध होने पर आचार्य श्री और प्रायश्चित मंत्री की आज्ञानुसार मैं उसका प्रायश्चित करूंगा।

श्रमण संघ के बंधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

मिति ""   हस्ताक्षर "

(इस प्रतिज्ञा फॉर्म के अनुसार ही इस नये संघ में सबको प्रविष्ट होना चाहिए)

—सर्व सम्मति से पास ता० ४ प्रातःकाल

चातुर्मास की विन्ति

प्र० ५३—चातुर्मास संबधी विन्ति पत्र माघ शुक्ला १५ तक आचार्य श्री के पास भेज देने चाहिए। आचार्य श्री उन पर विचार विनीमय करके फाल्गुन शुक्ला १५ तक चातुर्मास मन्त्री के पास भेज देंगे और चैत्र शुक्ला १३ तक चातुर्मास मन्त्री चातुर्मास की घोषणा कर देंगे।

—सर्व सम्मति से पास, ता० ५ प्रात काल

श्रमण सघ की समाचारी

प्र० ५४—वस्ती (मकान) संबध मे—

स्थानक सबधी निर्णय—

(१) पहले के जितने भी अलग २ सम्प्रदायो के श्रावकों के धर्म ध्यान करने के जो पंचायती स्थान (मकान) हैं, उनका वर्तमान में जो भी नाम है, उन सबका

भविष्य में भी श्रावक संघ धर्मध्यान करने के लिए जो स्थान (मकान) बनावें, उन सबका नाम "श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन स्थानक" रखना चाहिए।

—सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रातःकाल

(२) पहले के सभी धर्म ध्यान करने के स्थान (मकान) जिन २ के अधिकार में हैं व अधिकारी एक वर्ष में व स्थान (मकान) "श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक संघ" को सौंप देवें। भविष्य में भी जो स्थान (मकान) पंचायती रूप से धर्मध्यान करने के लिए बनें, व भी इस श्रावक संघ की अधीनता में रहें। पहले के जो २ स्थान (मकान) एक वर्ष में इस श्रावक संघ को नहीं सौंपे जायेंगे तथा भविष्य में जो स्थान (मकान) पंचायती रूप से धर्मध्यान के लिए बनेंगे, वे इस श्रावक संघ के अधीन नहीं होंगे

तो उनमें भी उक्त श्रमण संघ के साधु - साध्वी नहीं ठहरेंगे।

—सर्व सम्मति से पास ता० १ मई प्रात: काल

(३) शय्यान्तर-रात्रि प्रतिक्रमण से लेकर फिर आज्ञा वापिस लौटाने तक शय्यान्तरत्व स्वीकार किया जाय। आज्ञा लौटाने के बाद अगर उसी गाँव में रहे तो आठ प्रहर तक शय्यान्तर के घर को टालना और यदि उस गाँव से विहार करने जैसी स्थिति हो तो शय्यान्तरत्व नहीं रह जाता।

—सर्व सम्मति से पास ता० ३०-४ ५२ मध्याह्न

(४) कोई पंचायती मकान क्लेशवाला हो तो तत्कालीन परिस्थिति का विचार कर उसमें उतरना नहीं।

—सर्व सम्मति से पास

(२३) अविरवासी घर अथवा दुकान पर किसी साधु-साध्वी को जाना नहीं। जिसके लिए रुपया आदि दिलाने का संकेत करना पड़े ऐसे गृहस्थ पुरुष या स्त्री को साधु साध्वीजी के पास रखे नहीं।

—सर्व सम्मति से पास ता० २ मई प्रात काल

(२४) गृहस्थ लोग अपने उत्सव के निमित्त जो सभा-मण्डप या मंच तैयार करें, उसका श्रमण संघ व्याख्यान आदि के लिए उपयोग में ला सकते हैं।

—सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न

(२५) जिस क्षेत्र में वयोवृद्ध सन्त व शारीरिक कारण से सन्त विराजित हो वहाँ पर विदुषी प्रभाविका सतीजी का आगमन हो गया हो और श्री संघ विदुषी सतीजी का व्याख्यान श्रवण करने के लिए एक

हो तो वहाँ विराजित सन्तों की अनुमति से अवसर लेकर व्याख्यान दे सकते हैं। अवसर देखकर अन्य मुनि भी अनुमति एवं की उदारता करें।

—सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न

२८—सम्यक्त्व (समकित) देना

सम्यक्त्व देते समय देव के रूप में वीत राग देव को देव तरीके स्वीकार कराना, पंच महाव्रत, पांच समिति, ३ गुप्ति का पालन करने वाले को गुरु तरीके स्वीकार कराना, 'अहिंसा परमो धर्म' को धर्म रूप में स्वीकार कराना, श्रमण संघ के आचार्य को धर्माचार्य के रूप में स्वीकार कराना। तीसरे पद में उनका नामोच्चार करना।

—सर्व सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न

प्र २६—श्रमण संघ में शामिल करना

१ सादड़ी सम्मेलन में बृहद् गुजरात
सन्त (बरवाला के अतिरिक्त) नहीं
पधारे हैं। स्थानकवासी जैन धर्म
एक प्रान्त के मुनियों का अलग रहना
ठीक नहीं। यह सम्मेलन हृदय से
चाहता है कि, गुजरात, कच्छ, और
सौराष्ट्र के मुनिवर इस श्रमण संघ में
प्रविष्ट हो जाय। इसके लिए यह
सम्मेलन यह चाहता है कि,-चातुर्मास
के बाद सं० २००६ के माघ मास तक
गुजर प्रान्तीय सम्मेलन होकर वे सब
श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण
संघ से संघटित हो जाय। कॉन्फ्रेंस
और बृहद् गुजरात के श्रावक इसके
लिए पूर्ण प्रयत्न करें।

२. संघ से बाहर रहे हुए साधु साध्वियों को संघ में प्रवेश कराने का अधिकार दोनों आचार्य (आचार्य-उपाचार्य) और प्रधान मन्त्री को दिया जाता है कि, वे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर उन्हें संघ में प्रविष्ट कर सकते हैं। उसे यह श्रमण संघ स्वीकार कर सकेगा।

३ जिन जिन सम्प्रदायों के मुनिवर इस संघ में प्रविष्ट हुए हैं, वे अपनी अपनी सम्प्रदाय के सन्त-सतियों को संघ के विधानानुसार संघ में प्रविष्ट कराने का यथाशीघ्र प्रयत्न करें।

—सर्व सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न

प्र० ३०—पारस्परिक व्यवहार —

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ में प्रविष्ट होने वाले मुनियों के पारस्परिक

११ संभोग (व्यवहार) परजियात
(खुले रहने) और बारहवाँ आहार
करने का मरजियात (ऐच्छिक) होगा

—सर्वसम्मति से पास ता० ४ ता

प्र० ३१—श्रावक संघ को चेतावनी.—

जो संघ सामूहिक रूप से इस श्रमण सं
के नियमों को बार बार तोड़ेंगे, तो वह
चातुर्मास नहीं करना चाहिए। शेषकाल
का आगार।

—सर्वसम्मति से पास ता० ५ मध्या

प्र० ३२—आभार प्रदर्शन व धन्यवाद

१ सादड़ी साधु सम्मेलन में जो आ
आचार्य, युवाचार्य, उपाध्याय, स्थ
विर आदि मुनिराज उम्र विहार करके
अनेक परिषहों को सहन करते
पधारे हैं और वहाँ

सम्मेलन को सफल बनाया है इसलिए वे सब धन्यवाद के पात्र हैं।

२. आचार्य, युवाचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक आदि २ पदवियों का मय ऐक्य के लिए जिन २ मुनिराजों ने विसर्जन किया है, एतदर्थ वे सब धन्यवाद के पात्र हैं।

३. शान्ति-स्थापक आचार्य श्री गणेशीलालजी म० सा० और पं० रत्न श्री मदनलालजी म० सा० के नेतृत्व में यह साधु सम्मेलन व्यवस्थित रूप से सफल हुआ है इसके लिए हम सब प्रतिनिधि मुनि हृदय से आभारी हैं।

४ साधु सम्मेलन नियोजक समिति के मन्त्री श्री धीरजभाई के० तुरखिया ने साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में जो प्रयत्न किया है और उनके इस शुभ

कार्य में जिन २ महाशयों ने सहयोग दिया है उन सबका यह साधु सम्मेलन सहर्ष नोंध लेता है।

—सर्व सम्मति से पास ता० ६-५-५२

प्र० ३३—मंगल कामना —

१ हम सब उपस्थित प्रतिनिधि मुनि हृदय से यह कामना करते हैं कि यह बृहत्साधु सम्मेलन सफल हो, साधु साध्वियों के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र में वृद्धिकारक हो, सर्वत्र प्रेमपूर्वक एकता का साम्राज्य स्थापित करने वाला बने ऐसी हम कामना करते हैं। आत्म साक्षी से हम सब अपने वचन पालन में सुदृढ़ रहें।

—सर्वसम्मति से पास ता० ६-५-५२

मंगल पाठ के साथ सम्मेलन की कार्यवाही शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई।

ॐ शान्तिः! शान्ति !! शान्ति !!!

ता० ६ ५ ५२ को सर्वानुमति से श्रमण संघ का विधान और शोक प्रस्ताव पास हुए थे वे परिशिष्ट न० १ २ में दिये हैं। सादडी मे उपस्थित साधु-साध्वियों का नामावली परिशिष्ट ३ में दी है।

अ त में 'श्रावक संघ' का वक्तव्य निर्देश है जं संघ-ऐक्य की पुष्टि के लिए श्रावक संघ के लि अवश्य करणीय है।

नोट —श्री साधु सम्मेलन की कार्यवाही का कच्चा नोट हमें मिला उस पर से यह प्रक शन किया गया है। इसमें किसी भी प्रक की त्रुटि रह गई हो तो सूचना मिलने द्वितीयावृत्ति में संशोधन किया जा सकेगा

॥ ॐ अर्हन् ॥

श्री वर्द्धमान स्था जैन श्रमण संघ का

विधान

उद्देश्य—वर्द्धमान स्था जैन समाज में भिन्न २ सम्प्रदायों का अस्तित्व है। इन सम्प्रदायों में प्रचलित भिन्न २ परम्परा और समाचारी में एकता लाकर समस्त सम्प्रदायों का एकीकरण करना, परस्पर में प्रेम और ऐक्य की वृद्धि करना संयम मार्ग में आई हुई शिथिलताओं को दूर करना और एक आचार्य के नेतृत्व में एक और अविभाज्य 'श्रमण संघ' बनाना।

नाम—इस संघ का नाम 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' रहेगा।

कार्यक्षेत्र—'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' का कार्यक्षेत्र इस प्रकार रहेगा—

१–आत्म शुद्धि के लिये श्रद्धा, प्ररूपणा में एकता और चारित्र में शुद्धता एवं वृद्धि करना तथा शिथिलाचार एवं स्वच्छन्दाचार रोकना।

२–समस्त साधु साध्वियों को सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए व्यवस्था करना।

३–आगम-साहित्य का संशोधन व भाषान्तर करना तथा जैनधर्म के प्रचार के लिये रुचिवर्धक नया साहित्य निर्माण करना।

४–धार्मिक शिक्षण में वृद्धि हो ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना।

५–जैन तत्त्वज्ञान का व्यापक प्रचार करना।

६–चतुर्विध श्री संघ में ऐक्य बढ़ाने के प्रयत्न करना।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ में प्रविष्ट होने की विधि

१–प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु साध्वीजी को अपनी अपनी सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक

निलीनीकरण करके (त्याग कर) उक्त संघ में प्रविष्ट होने का प्रतिज्ञा-पत्र भरना पड़ेगा।

२–अपने गुरुजनों अथवा बड़े मुनिराज (साध्वीजी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आलोचना करके छेद पर्याय कम करके श्रमण संघ में प्रविष्ट होते समय पूर्व दीक्षा पर्याय मानी जायगी।

— —

साधु-साध्वीजी को संघ में प्रवेश होते समय का प्रतिज्ञा-पत्र

मैं मेरी सम्प्रदाय, एवं साम्प्रदायिक पदवियों का विसर्जन करके 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' में प्रविष्ट होता हूँ। मैं संघ के बंधारण अनुसार आचार्य और मन्त्री मण्डल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन, तथा बड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुरुणी, बड़ी साध्वी) समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक मैं लगे हुए जानते अजानते सभी दोषों की आलोचना करली है और छेद पर्याय बाद करते आज मेरी दीक्षा पर्याय ~ ~ ~ ~ ~ की है।

मन्त्रियों, गुरुजनों तथा श्रमण संघ व आचार्य श्री को मेरे भविष्यकाल के चारित्र के सम्बन्ध में कोई शंका उत्पन्न होगी उसका प्रायश्चित्त करूंगा।

श्रमण-संघ के बंधारण और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा।

ता० ~ ~ १९५२ हस्ताक्षर ~ ~ ~

बंधारण

श्री 'वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ' का बंधार
निम्न प्रकार का होगा :—

१–इस श्रमण संघ के 'एक आचार्य' रहें
जिनकी नेश्राय में संघ के सब साधु-साध्वी रहेंगे।

२–आचार्य श्री अतिवृद्ध हो अथवा कार्य प
में असम हो तो मंत्री मंडल 'उपाचार्य' नियुक्त क
और उपाचार्यजी आचार्यजी के सब अधिकार सम्हालें

३–आचार्यश्री की अनुपस्थिति में मन्त्री मं
आचार्य की नियुक्ति करेगा।

४–शासन की सुव्यवस्था के लिये तथा आ
श्री को मददरूप होने के लिये आचार्य श्री की इ
मुजब की संख्या का एक मन्त्री मण्डल होगा
आचार्यश्री की आज्ञा अनुसार कार्य करेंगे। मन्त्री मण
बनाते समय आचार्य श्री मुख्य २ मुनिराजों की स
लेंगे।

५–मन्त्रियों के रिक्तस्थान की पूर्ति आचार्य श्री की सलाह अनुसार मन्त्री-मण्डल कर सकेगा।

६–मन्त्रीमण्डल की संख्या घटाने बढ़ाने की और कार्य विभाग में आवश्यक फारफेर करने की सत्ता आचार्य श्री को होगी।

७–मन्त्रीमंडल को आवश्यक विभाग सिपुर्द किये जायेंगे। मन्त्रीमंडल में १ प्रधान मन्त्री और प्रधान मन्त्री की इच्छानुसार २ सहायक मन्त्री होंगे।

८–प्रधान मन्त्री, सहमन्त्रियों के सहयोग से मन्त्री-मण्डल के कार्य की देखभाल करेंगे तथा समय २ पर आवश्यक समाचार आचार्य श्री का देते रहेंगे। आचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं को मन्त्रीमंडल कार्यान्वित करेंगे।

९–मन्त्रीगण एक से अधिक विभाग सम्भाल सकेंगे तथा संयुक्त विभाग की जवाबदारी ले सकेंगे।

१०–आचार्यश्री यावज्जीवन के लिये

1 ११-मन्त्रीमंडल का कार्यकाल ३ वर्ष का रहेगा। तीन वर्ष के बाद आचार्य श्री मन्त्रीमंडल चुनेंगे। उस समय मुख्य मुनिवरों की सलाह लेंगे।

पसंदगी

१-आचार्यजी की पसंदगी मन्त्रीमंडल करेंगे। उनके रिक्तस्थान पर मन्त्रीमण्डल नई नियुक्ति कर सकेगा।

२-मन्त्रीमण्डल की सभा यथासमय प्रतिवर्ष अथवा तीन वर्ष में अवश्य होगी।

३-बृहत् साधु सम्मेलन प्रति ५ वर्ष में अथवा ७ वर्ष में तो अवश्य आचार्यश्रीजी मन्त्रीमण्डल के परामर्श से करावेंगे।

कार्यप्रणाली—यथा सम्भव सभाओं का कार्य सर्वानुमति से होगा। बहुमत का प्रसंग आवे तो ३ बहुमत से अर्थात् ७५/ से होगा।

आचार्यश्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१–साधु साध्वियों के चातुर्मास के लिये श्री संघों से जो विनति पत्र आवेंगे उसपर अपनी सूचनायें देंगे और प्रधान मन्त्री के द्वारा चातुर्मास मंत्री को योग्य करने के लिए भिजवायेंगे।

२–मंत्रीमंडल और प्रधान मन्त्री के कार्य की देखभाल करेंगे, और योग्य आज्ञा व सूचनाएं प्रधान मन्त्री को भेजेंगे।

३–शेष काल और चातुर्मास में साधु साध्वियों का लाभ अधिक क्षेत्रों को मिले, धर्म का अत्यधिक प्रचार हो, ऐसी व्यवस्था प्रधान मन्त्री द्वारा करायेंगे।

४–साधु-साध्वियों के ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि हेतु श्रद्धा, प्ररूपणा की एकता हेतु और चतुर्विध श्री संघ का उत्थान एवं कल्याण हेतु यथायोग्य करते रहेंगे।

५-श्रमण संघ के सब साधु साध्वी पर आचार्य श्री का अधिकार होगा तथा दीक्षार्थियों की योग्यता देखकर दीक्षा की आज्ञा देंगे।

६-श्रमण संघ से बाहिर के साधु साध्वियों को तथा संघ में मिलने की इच्छा रखने वाले अन्य साधु साध्वियों को यथाविधि मिलाने का अधिकार आचार्य श्री को होगा।

७-प्रधान मन्त्री और मन्त्री मण्डल के कार्य को सुचारु चलाने और शासन की सुव्यवस्था के लिए आज्ञा व सूचनाएं दे सकेंगे।

उपाचार्य के अधिकार एवं कर्त्तव्य

१-आचार्य श्री जितनी २ सत्ता और अधिकार देंगे तदनुसार अधिकारपूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन सम्हालेंगे।

मन्त्री मंडल के कर्त्तव्य एवं अधिकार

१-योग्यतानुसार सुपुर्द किये हुए विभागों का और उन्नति बनाने के लिए साधु साध्वियों

े आज्ञा और सूचना देते रहना आवश्यक है।

२–परस्पर मन्त्रियों से सहकारपूर्ण कार्य करना।

३–आचार्य श्री और प्रधान-मन्त्री की आज्ञा एव चनाओं का पालन करना करवाना।

४–अपनी कार्यवाही और गति विधि से प्रधान न्त्री तथा आचार्य श्री को सुपरिचित रखना।

प्रधानमन्त्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१–आचार्यश्री या उपाचार्यश्री की आज्ञा और सूचनाओं का पालन करना और मंत्रियों से करवाना।

मंत्रीमडल के कार्य पर देखभाल रखना, उचित आज्ञा सूचनाएं एवं परामर्श मंत्रियों को देते रहना।

३–सहमन्त्रियों से परामर्श लेते रहना।

४–मन्त्रीमण्डल के कार्य से सुपरिचित रहना और मण्डल की गतिविधि से आचार्यश्रीजी को तथा उपाचार्यश्रीजी को -परिचित रखना।

सहमन्त्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-प्रधान मन्त्री का हर कार्य में सहयोग देंगे।

२-अपने विभाग का उत्तरदायित्वपूर्ण सम्भालना।

मंत्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-मन्त्रियों के सुपुर्द अपने २ विभाग को सुचारु रूप से चलाना।

२-साधु-साध्वियों के साथ प्रेमपूर्ण रीति से आज्ञा पलवाना।

३-अपने सहकारी मन्त्रियों के साथ स्नेहपूर्वक कार्य संचालन करने में सहयोगी बनाना।

४-अपने कार्य की गति विधि से प्रधान मन्त्रीजी को सुपरिचित रखना।

५-आचार्यश्रीजी और प्रधान मन्त्रीजी की आज्ञा और सूचनाओं का यथायोग्य पालन करना, कराना। विधान में योग्य संशोधन करने की सत्ता आचार्य श्री को

आचार्य श्री मंत्रीमंडल की सलाह लेंगे

प्रायश्चित्त और पृथक्करण

उत्तरगुण सम्बन्धी छोटे अपराधों का प्रायश्चित्त साधु साध्वियों साथ में विचरने वाले बड़े साधु साध्वी दे सकेंगे। उसकी सूचना प्रायश्चित्त मन्त्री को दी जायगी।

बड़े (महाव्रत भंग) के अपराधों का प्रायश्चित्त मन्त्री द्वारा होगा। जिसकी सूचना प्रधानमन्त्री और आचार्य श्री को दी जायगी। चतुर्थव्रतभंग के प्रत्यक्ष अपराध का प्रायश्चित्त प्रधानमन्त्री और आचार्य श्री की सलाह से होगी।

किसी मन्त्री का अपराध हो तो प्रधानमन्त्री द्वारा आचार्य श्री की सम्मति से प्रायश्चित्त होगा।

प्रधान मंत्री का अपराध हो तो आचार्य श्री द्वारा प्रायश्चित्त होगा।

आचार्य श्री को प्रायश्चित्त स्थान उपस्थित
सहमन्त्रियों द्वारा ॥
पर

प्रायश्चित्त का निश्चय न होने तक अपने साथ के साधु-साध्वी का आहार या वन्दना सम्बन्ध विच्छेद किया जा सकेगा। उसकी सूचना प्रायश्चित्त मन्त्री को दी जानी चाहिये।

आचार्यश्री और प्रधान मन्त्री की आज्ञा बिना किसी साधु साध्वी को कोई पृथक् नहीं कर सकेगा।

सर्वानुमति से पास ता० ६ ५ ५२



परिशिष्ट—२

शोक प्रस्ताव

अजमेर साधु सम्मेलन के पश्चात् हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये हैं। उनके वियोग से यह सम्मेलन हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है, उनकी आत्म शान्ति चाहता है और उनके सत परिवार तथा साध्वी परिवार के साथ समवेदना प्रकट करता है।

१ पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज
२ ,, ,, मन्नालालजी ,,
३ ,, ,, मोहनलालजी ,,
४ ,, ,, काशीरामजी ,,
५ ,, ,, मणिलालजी ,,
६ प मुनि श्री मूलचन्दजी ,, (बोटाद)
७ पूज्य श्री विनयचन्दजी ,,
८ ,, ,, जवाहरलालजी ,,
९ ,, ,, खूबचन्दजी ,,
१० ,, ,, उत्तमचन्दजी ,,

११	शतावधानी रत्नचन्द्रजी	म०
१२	जैनदिवाकर चौथमलजी	,,
१३	प मुनि श्री केशरीमलजी	,,
१४	पूज्य श्री अमोलकऋषिजी	,,
१५	,, ,, देवऋषिजी	,,
१६	,, ,, गुलाबचन्दजी	,,
१७	गणि श्री उदयचन्दजी	,,
१८	पूज्य श्री मोतीलालजी	,,
१९	प० ,, हर्षचन्द्रजी	,,
२०	मुनि श्री गणेशमलजी	,,
२१	प मुनि श्री चैनमलजी	,,
२२	मुनि श्री मोतीलालजी	,,
२३	प्रवर्तक श्री ताराचन्दजी	,,
२४	स्थविर मुनि श्री फकीरचन्दजी	,,
२५	प्रवर्तक श्री धीरजमलजी	,,
२६	मुनि श्री कुन्दनमलजी	,,
२७	प मुनि श्री जोधराजजी	,,
२८	,, ,, भोजराजजी	,,

२६ मुनि श्री कन्हैयालालजी म०
३० „ „ प्रेमऋषिजी „
३१ तपस्वी चम्पकऋषिजी „
३२ पं मुनि श्री नंदलालजी „
३३ तपस्वी श्री हजारीमलजी „
३४ पं मुनि श्री हजारीमलजी „
३५ मुनि श्री हाम्य दनी „
३६ तपस्वा सवा माको मोतीलालजी महाराज
३७ „ केशरीमलजी महाराज
३८ छगनालालजी „
३९ „ चौथमलजी „
४० „ मोडीलालजी „
४१ „ फौजमलजी „
४२ मुनिश्री बद्धरानजी „
४३ तपस्वी श्री सुन्दरलालजी „
४४ स्थविर लालचन्दजी „
४५ गणावच्छेदक छोटेलालजी „

४६	गणावच्छेदक	जयरामजी	म०
४७	,,	गोकुलचंदजी	,,
४८	,,	बनवारीलालजी	,,
४६	प्रवर्तक श्री	सालगरामजी	,,
५०	,, ,,	मजारूचीरामजी	,,
५१	बहुसूत्री	नथूलालजी	,,
५२	प मुनि श्री	गोविन्दरामजी	,,
५३	महातपस्वी	नारायणदासजी	,,
५४	प्रवर्तक श्री	कजोडीमलजी	,,
५५	,, ,,	बालचन्दजी	,,
५६	मुनि श्री	हेमराजजी	,,
५७	प्रवर्तिनी श्री	पार्वतीजी	,,
५८	,, ,,	राजमवरजी	,,
५६	,, ,,	आनन्दकवरजी	,,
६०	, ,,	सुगनकवरजी	,,

आदि स्वर्गस्थ मुनिराज, प्रवर्तिनीजी महा सतियाँनी एव अन्य सतियांजी महाराज।

सर्वानुमति से पास ता० ६ ५ ५९

परिशिष्ट—२

श्री बृहत्साधु सम्मेलन, सादड़ी में उपस्थित
— मुनियों की नामावली —



१ पूज्य श्री आत्मारामजी म सा की संप्रदाय के मुनि २०

उपाध्याय श्री प्रेमचन्दजी म० के साथ ६ सन्त

(१) उपा० श्री प्रेमचन्दजी म०
(२) मुनि श्री धावारीलालजी म०
(३) ,, ,, तुलसीजी ,,
(४) ,, ,, शान्तिलालजी ,,
(५) ,, ,, सौभाग्यमुनिजी ,,
(६) ,, ,, धर्मवीरजी ,,

युवाचार्य श्री शुक्लचन्द्रजी म० के साथ ८ सन्त

१ युवा० श्री शुक्लचन्द्रजी म०
२ तपस्वी श्री सुदर्शनजी ,
३ ,, राजेन्द्र मुनिजी म०
४ ,, सुरेन्द्र ,, ,,

५ श्री हरिश्चन्द्रजी म०
६ ,, महेन्द्र मुनिजी ,,
७ ,, जगदीशचन्द्रजी ,,
८ ,, सुमन मुनिजी ,,

व्या० वा० पं० मुनि श्री मदनलालजी म० के साथ

४ सन्त

१ प० मुनि श्री मदनलालजी म०
२ ,, ,, मूलचन्द्रजी म०
३ ,, ,, फूलचन्द्रजी म०
४ ,, ,, रामचन्द्रजी म०

वक्ता प० विमल मुनिजी म० के साथ २ सन्त

१ वक्ता पं० मुनि श्री विमलचन्द्रजी म०
२ ,, दर्शन मुनिजी ,,

२ पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० की सम्प्रदाय के

मुनि ११

१ पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा०
२ तपस्वी नन्दलालजी ,, ,,

३ पं० मुनि श्री भीमनजी म० सा०
४ ,, ,, चतुरसिंहजी ,, ,,
५ ,, ,, सुन्दरलालजी ,,
६ ,, ,, मानालालजी ,, ,,
७ ,, ,, रामारमनजी ,, ,,
८ ,, ,, आईदानजी ,, ,,
९ ,, ,, रूपचन्दजी ,, ,,
१० ,, ,, हनुमानमलजी ,,
११ ,, ,, डोलारामजी ,, ,,

६ पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म० सा० की सम्प्रदाय के
मुनि ८

१ पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म० सा०
२ श्री उत्तमऋषिजी ,,
३ कवि श्री हरिऋषिजी ,,
४ ,, मोतीऋषिजी ,,
५ ,, मानुऋषिजी ,,
६ ,, भसवन्तऋषिजी ,,

७ श्री पुष्पश्रीजी म० सा०
८ ,, हिम्मतश्रीजी ,,

४ पूज्यश्री सूरजचन्द्रजी म० सा० की संप्रदाय के मुनि २५

प० मुनि श्री किस्तूरचन्दजी म० के साथ सन्त ४

१ पं० मुनिश्री किस्तूरचन्दजी म०
२ ,, वर्द्धमानजी ,,
३ ,, पन्नालालजी ,,
४ ,, दरियाव मुनिजी म०

प० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० के साथ सन्त १२

१ श्री बड़े नाथूलालजी म० सा०
२ पं० श्री प्यारचन्दजी ,,
३ ,, मनोहरलालजी म०
४ ,, पन्नालालजी ,,
५ ,, चन्दनमलजी ,,
६ तपस्वी मेघराजजी ,,
७ श्री मूलचन्दजी ,,
८ ,, अशोक मुनिजी ,,

१ तपस्वी माणकचन्दजी म०
१० ,, गणेश मुनिजी ,,
११ ,, मोहन मुनिजी ,,
१२ ,, उदय मुनिजी ,,

पूज्य श्री सेषमलजी म० के साथ स त ६

१ पूज्य श्री सेहषमलजी म०
२ मुनि श्री चम्पालालजी म
३ ,, मिश्रीमलजी ,,
४ ,, रानमलजी ,
५ ,, ईश्वरचन्दजी ,,
६ ,, पारसमलजी ,,

प० मुनि श्री नाथूलालजी म के साथ सन्त १३

१ श्री नाथूलालजी म० २ श्री रामलालजी म०
३ ,, मोहनमुनिजी , ४ , सोहन मुनिजी म०
५ ,, हुकमीचन्दजी , ६ ,, बसन्तीलालजी ,,
७ ,, विमल मुनिजी म० ८ ,, सागरमलजी

६ ,, देवमुनिजी म० १० ,, अजित मुनिजी ,,
११ ,, प्रेम मुनिजी ,, १२ ,, बाल मुनिजी ,,
१३ श्री चमन मुनिजी म०

५. पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के मुनि ६

१ पं० मुनि श्री सौभाग्यमलजी म०
२ , सूर्यमुनिजी ,,
३ ,, ,, केवल मुनिजी ,
४ ,, ,, मथुरा मुनिजी ,
५ ,, ,, सागर मुनिजी ,
६ ,, ,, सुरेन्द्र मुनिजी ,,

६—पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी म०सा०की संप्रदाय के संत ४

१ आचार्य श्री इन्द्रमलजी महाराज
२ ,, लालचन्द्रजी ,,
३ , मोहनलालजी ,,
४ , रामचन्द्रजी ,,

७—पूज्य श्री हस्तीमलजी म०सा०की संप्रदाय के संत ६

१ पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज

२ मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी महाराज
३ ,, लाभचन्द्रजी ,,
४ ,, चौथमलजी ,,
५ ,, माणक्मुनिजी ,,
६ ,, रतन मुनिजी ,,

८—पूज्यश्री शीतलरामजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त ५

१ मुनि श्री भूरालालजी महाराज
२ ,, छोगालालजी ,,
३ ,, गोकुलचन्द्रजी ,,
४ ,, मोहनलालजी ,,
५ ,, वरदीचन्द्रजी ,,

९—पूज्य श्री मोतीलालजी म० (मेवाड़ी) की सम्प्रदाय के सन्त ८

१ मुनि श्री अम्बालालजी महाराज
२ ,, शांतिलालजी ,,
३ ,, इन्द्रमलजी ,,
४ ,, सौभाग मुनिजी ,,

१०—पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त ३

१ उपाध्याय श्री अमरचन्दजी महाराज
२ मुनि श्री विनय मुनिजी ,,
३ ,, मनोज मुनिजी ,,

११—पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० के स्थविर श्री हजारीमलजी म० सा० के सन्त २

१ मुनि श्री व्रजलालजी महाराज
२ पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी ,,

१२—पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० के पं० मुनि श्री चौथमलजी म० सा० के सन्त ३

१ पं० मुनि श्री चाँदमलजी महाराज
२ ,, ,, लालचन्द्रजी ,,
३ उपाध्याय श्री जीतमलजी ,,

१३—पूज्य श्री नानकरामजी म० सा० के सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक श्री पन्नालालजी म० सा० के सन्त २

१ मुनि श्री हगामीलालजी महाराज
२ ,, सोहनलालजी ,,

१४—पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त ७

१ मन्त्री मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज
२ मुनि श्री नारायणदासजी ,,
३ ,, प्रतापमलजी ,,
४ ,, पुष्कर मुनिजी ,,
५ ,, हीरा मुनिजी ,,
६ ,, देवेन्द्र मुनिजी ,,
७ ,, गणेश मुनिजी ,,

१५—पूज्य श्री रघनाथजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त २

१ मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज
२ मुनि श्री रूपचन्द्रजी ,,

१६—पूज्य श्री चौथमलजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त ३

१ प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंहजी म०
२ मुनि श्री रूपचन्द्रजी ,,
३ ,, केवलचन्द्रजी ,,

१७—पूज्य श्री स्वामीदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त २

१ प० मुनि श्री कन्हैयालालजी म०
२ ,, मिश्रीलालजी ,,

१८—ज्ञातपुत्र महावीरसंघीय सन्त ३

१ धर्मोपदेष्टा श्री फूलचन्दजी म०
२ मुनि श्री सुमित्र देवजी ,,
३ ,, जिनचन्दजी ,,

१९—पूज्य श्री रूपचन्द्रजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त ३

१ स्व० मुनि श्री छोगालालजी म०
२ ,, प० सुशील कुमारजी म०
३ ,, सौभाग्य मुनिजी ,,

२०—पं० मुनि श्री घासीलालजी म० सा० की सम्प्रदाय के सन्त २

१ पं० मुनि श्री समीर मुनिजी म०
२ तपस्वी श्री माँगीलालजी म०

१—बरवाला सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के सन्त २

१ प० मुनि श्री चम्पकलालजी म०
२ मुनि श्री अमर मुनि म०

—ःउपस्थित आर्याजी की शुभ नामावलीः—

१—श्री ऋषि संप्रदाय की सतियाँ २३

१ प्रवर्तनी श्री रतनकु वरजी म०
२ महासतीजी श्री सिरेकु वरजी म०
३ ,, लछमाकु वरजी ,
४ ,, उमरावकु वरजी ,,
५ ,, रमाजीकु वरजी ,,
६ , केशरकु वरजी ,
७ ,, वल्लभकु वरजी ,,
८ ,, हुलासकु वरजी (बड़ा)
९ ,, श्रीमतीजी म०
१० ,, सज्जनकु वरजी ,
११ ,, सोहनकु वरजा ,

१२ ,, सुमतिकुवरजी ,,
१३ ,, पानकुवरजी ,,
१४ ,, सूरजकुवरजी (बड़ा)
१५ ,, सूरजकुवरजी (छोटा)
१६ ,, गुलाबकुवरजी (बड़ा)
१७ ,, नवलकुवरजी म०
१८ ,, गुलाबकुवरजी (छोटा)
१९ ,, दयाकुवरजी म०
२० ,, गुमानकुवरजी म०
२१ ,, हुलासकुवरजी छोटा म०
२२ ,, कुशलकुवरजी ,,
२३ ,, चदनकुवरजी ,,

२—श्री घमदासजी म० सा० की संप्रदाय की सतियां १२

१ श्री चाँदकुवरजी म०
२ ,, वल्लमकुवरजी ,,
३ ,, वल्लमकुवरजी ,, छोटा
४ ,, कुदनकुवरजी ,,

५	श्री मदनकुवरजी	म०
६	,, मनोहरकुवरजी	,,
७	,, मोहनकुवरजी	,,
८	,, मगनकुवरजी	,,
९	,, जोरावरकुवरजी	,,
१०	,, शांतिकुवरजी	,,
११	,, चंदनकुवरजी	,,
१२	,, गुमानकुवरजी	,,

३—पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की संप्रदाय की सतियाँ १५

१	श्री सज्जनकुवरजी	म०
२	,, सौभाग्यकुवरजी	,,
३	,, कंचनकुवरजी	,,
४	,, लहरकुवरजी	,,
५	,, शंभुकुवरजी	,,
६	,, शीलकुवरजी	,,
७	,, रामुकुवरजी	,,

८ श्री मोहनकुवरजी म०
६ ,, वल्लभकुवरजी ,,
१० ,, सुगनकुवरजी ,,
११ ,, सायरकुवरजी ,,
१२ ,, कौशल्याकुवरजी ,,
१३ ,, दयाकुवरजी ,,
१४ ,, चतुकुवरजी ,,
१५ ,, विमलकुमारीजी ,,

४—पूज्य श्री शीतलदासजी म०सा० की संप्रदाय की सतियाँ ४

१ श्री नसकुवरजी म०
२ ,, सुगनकुवरजी ,,
३ ,, गुलाबकुवरजी ,,
४ ,, सौभागकुवरजी ,,

५—पूज्य श्री मोतीलालजी म० सा० की संप्रदाय की सतियाँ ४

१ श्री सौभागकुवरजी म०

२ श्री प्रेमकुवरजी म०
३ " सज्जनकुवरजी "
४ " प्रभावतीजी "

६—प्रवर्तनी श्री रंगूजी म० की संप्रदाय की सतियां ४

१ श्री सौभागकुवरजी म० बड़ा
२ श्री सौभागकुवरजी म० छोटा
३ श्री टीपूकुवरजी म०
४ श्री नगीनकुवरजी म०

कुल सतियां ६२

परिशिष्ट—४

बृहत् साधु सम्मेलन में हुए श्रमण संघ को
— स्थायी और सुदृढ बनाने के लिए —
श्रावक संघ का कर्त्तव्य



१—साधु सम्मेलन में जो 'संघ ऐक्य' का कार्य हुआ है उसको पुष्ट बनाने के लिए सर्वत्र श्रावक संघ आवश्यक कार्य करते रहें और कर्त्तव्य पालन की ओर खास लक्ष्य रक्खें।

२—आज तक चली आई साम्प्रदायिक दृष्टि और वैमनस्य को मिटाना, साम्प्रदायिक मंडल और समितियों बन्द करके अखण्ड ऐक्य का प्रतीक 'श्रीवर्द्धमान स्था० जैन श्रमणोपासक (श्रावक) संघ' की स्थापना स्थान २ पर स्थापना करना।

इस प्रकार नगर, प्रान्त और केन्द्रीय श्रावक संघ की स्थापना करना।

३—स्था० जैन समाज की ज्ञान संस्थाएँ (विद्यालय छात्रालय परीक्षा बोर्ड, पुस्तकालय आदि २) जहाँ २ चलती हो उसका संचालन किसी एक मूल सम्प्रदाय के द्वारा न होकर समस्त स्था० जैन श्रावक सदस्यों द्वारा होता रहे। इसका मूल नाम भले ही कायम रहे, परन्तु उस पर 'वर्द्धमान स्था० जैन संघ द्वारा संचालित' ऐसा बोर्ड पर लिखा जाना चाहिए।

४—आज तक के धर्म ध्यान करने के जो २ मकान हैं और होंगे, वे सब 'श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्री संघ के सुपुर्द कर देना चाहिए।' स्थानीय संघ उसकी सब प्रकार की व्यवस्था करेंगे। ऐसे सब मकानों के नाम 'श्री श्वे० स्था० जैन स्थानक' रखे जावें।

५—साधु-साध्वियों के विकल्प मिटाकर प्रतिज्ञा पत्र भरवाना। श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ में नहीं मिले हुए साधु साध्वियों को मिलाने का प्रयत्न करना और सम्मिलित साधु साध्वियों में कोई वैमनस्य हो जाय तो जिन २ को याद करें उनको इशारा

पास ही उपस्थित होकर सुमेल स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न करना।

६—चातुर्मास में शिष्ट-मण्डल बना कर प्रचार करना, मतभेद मिटाकर प्रमपूर्ण संघ व्यवस्था करना।

७—चातुर्मास में विराजित मुनिवरों द्वारा होने वाली सब प्रकार की प्रवृत्तियों की रिपोर्ट आचार्यश्री, उपाचार्य श्री या प्रधान मन्त्रीजी की सेवा में लिख भेजना, जिसको आचार्य श्री की आज्ञानुसार विशेषांक द्वारा प्रकट की जावे।

८—चातुर्मास की विनती माघ शुक्ला १५ तक आचार्य श्री की सेवा में भेजना और अपने क्षेत्र के लिए जिन साधु या साध्वीजी का चातुर्मास चैत्र शु० १३ तक चातुर्मास मन्त्रीजी घोषित करें उन पर संतोष मानकर चातुर्मास में विराजने वाले साधु साध्वीजी की बहुमानपूर्वक सेवा भक्ति करना।

९—संघ का प्रचार कार्य हर प्रकार से ऐसा करना चाहिए कि गाँव २ में और घर २ में संघ की आवाज व जानकारी पहुँच जाय।

१०—गूर्जर प्रान्तीय साधु सम्मेलन तथा महा सतियों का प्रान्तीय सम्मेलन इस चातुर्मास के बाद यथाशीघ्र कराने का प्रयत्न करना। सतियों के प्रान्तीय सम्मेलन म निकट क मुख्य २ मुनिवरों को बुलाना, जो परामर्श और मार्गदर्शन देंगे।

११—श्रावक गण "साम्प्रदायिक नेतृत्व को न समझें और धर्म सेवा की भावना से कार्य करें।" सब पत्र-व्यवहार द्वारा प्रधान मन्त्रीजी, आचार्य श्रीजी और उपाचार्य श्रीजी को सब आवश्यकीय बातों मे जानकार रखते रहेंगे।

'संघ ऐक्य' को स्थायी और सुदृढ बनाने क लिए सब प्रकार से योग दान देने की सविनय साग्रह प्रार्थना है।

सघ ऐक्य सदा अमर रहो।

'जैन जयति शासनम्'।

'णमो संघस्स'

'संघे शक्ति'

चतुर्विध संघ की सांकल सुदृढ़ रहो।
अपने दोषों को दूर करके विशुद्ध जीवन जीओ।
सब के गुण देखते २ स्वयं गुणी बन जाता है।
गुणग्राहक बनो तो, सब तुम्हारे स्नेही बनेंगे।
हित मित और सत्य बोलना या मौन रहना।
सब का भला चाहो बुरा किसी का मत विचारो।
अहिंसा, सत्य और संयम जैन-जीवन है।
गुणीजन को वंदना, अवगुण देख मध्यस्थ।
दुखियों पर करुणा करें, मैत्रीभाव समस्त॥

शिवमस्तु सर्व जगत
परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषा प्रयान्तु नाशं,
सर्वत्र सुखी भवतु लोक॥

जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।

परिशिष्ट नं०—५

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ को

सुदृढ व स्थायी बनाने के लिए

अ भा श्री श्वे स्था जैन कान्फरेन्स के १२ वें सादडी अधिवेशन के दो प्रस्ताव



प्रस्ताव नं०—१०

(अ) कान्फ्रेंस की तरफ से प्रारम्भित "संघ ऐक्य योजना" जो गत तीन वर्षों से चल रही है और जिसको सफल बनाने के लिए कॉन्फरेंस ने तथा साधु सम्मेलन नियोजक समिति ने सतत अविश्रान्त प्रयत्न किया है। जिसको पूज्य मुनिराजों ने अधिकाधिक हार्दिक सहकार दिया है, इतना ही नहीं परन्तु सख्त गरमी में अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना दूर दूर से उग्र विहार करके बृहत्साधु सम्मेलन सादडी में पधार कर, साम्प्रदायिक मतभेदों को दूर करके, प्रेमपूर्वक संगठन योजना बना कर "श्री वर्द्धमान

स्था० जैन श्रमण संघ" की स्थापना की है। इसके लिए सब मुनिराजों के प्रति यह अधिवेशन सम्पूर्ण श्रद्धा और आदर प्रदर्शित करता है और बहुमान की दृष्टि से देखता है। भ० महावीर के शासन में बृहत्साधु सम्मेलन एक अद्वितीय और अभूतपूर्व घटना है, जो जैन शासन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से चिरस्मरणीय स्थान प्राप्त करता है। बृहत्साधु सम्मेलन सादड़ी में हुई कार्यवाही को यह अ० भा० श्री स्था० जैन कान्फ्रेंस का १२ वाँ अधिवेशन हार्दिक अनुमोदन करता है और सम्मेलन के प्रस्तावों के पालन में श्रावकोचित सवाङ्गीण और हार्दिक सहकार दृढ़तापूर्वक देने की अपनी सब प्रकार की जिम्मेदारी स्वीकार करता है। इसके लिए भारत भर के सब स्थानकवासी जैन श्री संघों को यह अधिवेशन अनुरोध करता है, कि साधु सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्ताव का पालन कराने के लिए सब अपनी अपनी जिम्मेदारी पूर्वक सक्रिय कार्य करें।

(क) भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के और मुनिवरों के प्रतिनिधि सादड़ी सम्मेलन में एक या दूसरे कारण से पधार नहीं सके हैं, उनको यह अधिवेशन साग्रह अनुरोध करता है, कि वे "श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ" में एक वर्ष में सम्मिलित हो जायें, इसी में उनका और स्था० जैन समाज का गौरव है।

(ख) यह अधिवेशन भारपूर्वक घोषित करता है कि समस्त भारतवर्ष के श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ के संगठन में जो साधु साध्वी एक वर्ष में सम्मिलित नहीं होंगे उनके लिए कॉन्फरेन्स को गम्भीर विचार करना होगा।

सन १६३३ में अजमेर सम्मेलन में आरम्भित कार्य आज सफल हो रहा है, इससे यह अधिवेशन हार्दिक संतोष प्रगट करता है।

प्रस्तावक—श्री कुन्दनमलजी सा० फिरोदिया
अनुमोदक—श्री चीमनलाल चकुभाई शाह M. P.
,, वनेचन्दभाई दुर्लभजी जौहरी

श्री धीरजलाल के० तुरखिया
„ मोतीलाल सा० मूथा, सतारा
„ मोहनमलजी चोरड़िया, मद्रास
„ बालचन्द्रजी श्रीश्रीमाल, रतलाम

प्रस्ताव १०—११

सादड़ी व वृहत् साधु सम्मेलन में प्रस्तावित 'श्री
वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ" की स्थापना, स्वी
कृत विधान और नियमोपनियमों के पालन करा
के लिए तथा वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण संघ
आचार्य और मन्त्री मण्डल के साथ सतत सम्पर्क
रह कर साधु सम्मेलन के प्रस्तावों का अमल करा
के लिए निम्न ५१ सदस्यों के अतिरिक्त आवश्य
सदस्यों को सम्मिलित (Co-opt) करने की सत्ता
साथ, एक "संचालक (Steering) समिति" नियुक्त
की जाती है —

१ शेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया प्रमुख, भीनास
२ श्रीमान् कुन्दनमलजी सा फिरोदिया, अहमदनगर

३ श्रीमान् धीरजभाई के० तुरखिया-मंत्री	ब्यावर
४ दि था श्री मोतीलालजी मुथा	सतारा
५ श्री माणकचन्द्जी मुथा	अहमदनगर
७ ,, देवराजजी सुराणा	ब्यावर
८ ,, जवाहरलालजी मुणोत	अमरावती
९ ,, हरजसरायजी जैन	अमृतसर
१० ,, रतनलालजी मित्तल	आगरा
११ ,, वनचन्द भाई दुर्लभजी जवेरी	जयपुर
१२ ,, रतनलालजी चोरड़िया	फलोदी
१३ ,, शांतिलालजी भाई मगनदास शेठ	अहमदाबाद
१४ ,, जेठमलजी सेठिया	बीकानेर
१५ ,, जादवजी मगनलाल वकील	सुरेन्द्रनगर
१६ ,, जेठालाल प्रागजी रूपाणी	जुनागढ़
१७ ,, गांडालाल नागरदास वकील	बोटाद
१८ रा० ब० मोहनलाल पोपटभाई	राजकोट
१९ श्री सरदारमलजी छाजेड़ -	शाहपुरा
२० ,, हरिलाल अनोपचन्द संघवी	खम्भात

२१	,, वलजी माइ क्षमसी नपु	बम्बई
२२	श्री चीमनलाल चतुर्भाई शाह	,,
२३	,, टुलमजी करावजी सेताणी	,,
२४	,, चीमनलाल पोपटलाल शाह	,,
२५	,, प्राणलाल इन्दरजी शेठ	,,
२६	,, गीरधरलाल दामोदर दफ्तरी	,,
२७	,, मुगनराजजी मेहता वकील	रायपुर
२८	,, सौभागमलजी कोचेटा	जावरा
२९	,, डॉ० नारणजी मोनजी वारा	बम्बई
३०	,, मिश्रीमलजी वाफणा	मन्दसोर
३१	,, राजमलजी चोरड़िया	चालीसगा
३२	,, हीराचन्दजी सींवसरा	पूना
३३	,, ताराचन्दजी सुराणा	यवतमाल
३४	,, चिमनसिंहजी लोढ़ा	ब्यावर
३५	,, छगनमलजी मुथा	बेंगलोर
३६	,, हीरालालजी नांदेचा	खाचरोद
	,, चांदमलजी मारू	मन्दसोर

३८ श्री सुजानमलजी मेहता	जावरा
३६ ,, बापुलालजी बोथरा	रतलाम
४० ,, रतनचन्दजी समलानी	सादड़ी
४१ ,, अनोपचन्दजी पुनमिया	,,
४२ ,, लल्लुभाई नागरदास	झींझड़ी
४३ ,, प्रेमचन्द भाई सुरामाई	,,
४४ ,, सुगनचन्दजी लूणावत	धामणगाम
४५ ,, कल्याणमलजी वेद	अजमेर
४६ ,, अर्जुनलालजी मागी	भीलवाड़ा
४७ ,, उमरावमलजी ढढ्ढा	अजमेर
४८ , नेंथल भाइ दामजी भाई	माडवी कच्छ
४९ ,, जेसींगभाइ पोचाभाई	अहमदाबाद
५० ,, माणकचन्दजी छल्लाणी	मैसूर
५१ ,, कॉन्फरेन्स के मन्त्री-Ex Officio	

प्रस्तावक —*धीरजलाल के० तुरखिया*

अनुमोदक —*मणिलाल वनमालीदास*

अनुमोदन देते हुए रा० सा० मणिलाल भाई ने कहा कि-"सौराष्ट्रना साधु साध्वीओ आवेल नथी तेमां समग्र गंभीर भूल करी छे अने तेथी अमारे नीचे जोवानु रहे छ, अग्रे सौराष्ट्र कच्छ गुजरातना आवक भाईओने हुँ विनती करीश के तेओ पोतान शहर अने पू० मुनिराजो ने अग्रे थयेल कार्यवाहीनी माहिती आपे अने संगठन ना आ कार्यमां शामल थवा समजावे। सौराष्ट्र-कच्छ-गुजरात ना पू० मुनिराजो आ संगठन मां भली जाय तमां ज तेमनी अने आपणा सौनी शोभा छे।"

